Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 1, January-2019, ISSN 2230-7540

बुन्देलो का विद्रोह

Kusum Lata*

Extension Lecturer in History, Government College, Meham, Haryana

सारांश – *पुरातात्विक साहित्यिक शोधों कि विपुलता ने इतने नये तथ्य प्रस्तुत किए हैं कि भारतवर्ष के समग्र इतिहास से पनरालेखन की आवश्यकता प्रतीत होने लगी है। "बुंदेलखंड का इतिहास भी इसी प्रकार नयी शोधों के संदर्भ में आलेखन की अपेक्षा रखता है। "बुंदेलखंड' शब्द मध्यकाल से पहले इस नाम से प्रयोग में नहीं आया है। इसके विविध नाम और उनके उपयोग आधुनिक युग में ही हुए हैं। बीसवीं शती के प्रारंभिक दशक में रायबहादुर महाराजसिंह ने बुंदेलखंड का इतिहास लिखा था। इसमे बुंदेलखंड के अन्तर्गत आने वाली जागीरों और उनके शासकों के नामों की गणना मुख्य थी। दीवान प्रतिपाल सिंह ने तथा पन्ना दरबार के प्रसिद्ध कवि "कृष्ण ने अपने स्रोतों से बुंदेलखंड के इतिहास लिखे परन्तु वे विद्वान भी सामाजिक सांस्कृतिक चेतनाओं के प्रति उदासीन रहे।*

---------------------------------X---------------------------------

अकबर के बाद जब हम अपने जिले के इतिहास पर नजर डालते हैं तो पाते है कि एक नया शासक वर्ग यहाँ पर बड़े शक्तिशाली रूप में उभरा और बहुत जल्द ही प्रभावशाली भूमिका में आ गया। जी हाँ, मैं बुंदेलों की बात कर रहा हूँ। भारतवर्ष अभी भी मुगलों के आधीन ही था किन्तु बुंदेलखंड में जिसमें जालौन भी शामिल है, उनकी सत्ता से पकड़ ढीली होने लगी थी। बुंदेले काफी हद तक स्वच्छन्द और स्वतंत्र आचरण करने लगे थे। जहाँगीरनामा जिसका अनुवाद ब्रजरत्न दास ने किया है के अनुसार कालपी की जागीर तो अब्दुल्ला खां के पास ही रही जिसने मधुकरशाह बुंदेला के पुत्र रामचन्द्र बुंदेला को परास्त करके तीन हजारी का मनसब जहाँगीर से प्राप्त किया। लेकिन एक बड़ा बदलाव जो जिला जालौन में देखने को मिला वह वह कोंच में था। जहाँगीर ने कोंच की जागीर वीर सिंह बुंदेला को दे दी, जिसने जहाँगीर के कहने से अबुलफजल की हत्या करवा दी थी। इस समय से हम कह सकते हैं कि जिले के कोंच इलाके में मुगलों का प्रभाव घटने लगा था बुंदेले प्रभावशाली होते चले गए, यद्यपि वे राजस्व मुगलों को देते रहे।

शाहजहाँ ने जब पिता जहाँगीर के खिलाफ विद्रोह किया तब कालपी के अब्दुल्ला खां शाहजहाँ के साथ हो गए इस कारण शाहजहाँ जब बादशाह हुआ तब उसने अब्दुल्ला खां को ही कालपी का हाकिम बना रहने दिया। लेकिन नवाब शमशुददौला शाहनवाज़ खां और उनके पुत्र अब्दुल हई की मंसिर-उल-उमरा जिसका अनुवाद एच वेवरिच (प्रथम भाग) ने किया से पता चलता है शाहजहाँ ने अपने शासनकाल में ही बाद में बहादुर खां रूहेला को चार हज़ार का मनसब 20000 घोड़े रखने के साथ कालपी की जागीर भी दी। शाहजहाँ के समय में कोंच की जागीर वीर सिंह बुंदेला के पुत्र जुझार सिंह के पास थी परन्तु उन्होंने विद्रोह कर दिया इस कारण उनको जागीर से हाथ धोना पड़ा। लेकिन बुंदेलखंड में चम्पत राय बुंदेला की शक्ति बढ़ रही थी। अब आवश्यक है कि यहाँ पर बुंदेलों के बारे में भी कुछ जान लिया जाय। लेकिन बहुत ही संक्षेप में क्योंकि मै बुंदेलों का इतिहास नहीं लिख रहा हूँ, इसलिए उनका जितना संबंध इस जिले से है उस पर ही कुछ साझा करूँगा।

जनपद में बुंदेलों का अधिकार वीरभद्र बुंदेला के समय में हुआ, जो पंचम बुंदेला का उत्तराधिकारी था। श्रीयुत विश्व ने बुंदेलखंड केशरी क्षत्रसाल पुस्तक में लिखा कि वीरभद्र ने कोंच से दस मील दूर पश्चिम में मऊ नामक स्थान पर अपनी राजधानी बना कर मऊ-मिहोनी राज्य को स्थापित किया। उनके अनुसार वीरभद्र ने अफगान सरदार तातार खां को जगम्मनपुर के पास हरा कर कालपी के आसपास तक अधिकार कर लिया था। वर्ष 1225 में अर्जुन पाल बुंदेला मऊ-मिहोनी के राजा हुए जिनकी तीसरी रानी से वीर पाल और देव पाल नाम के दो पुत्र हुए थे। वीर पाल के वंशज कोंच के पास व्योना, देवगांव आदि जगह पर रहने लगे।

चम्पत राय जिला जालौन में तो नहीं मगर बुदेलखंड के दूसरे भागों में भारी लूटपाट कर रहे थे। शाहजहाँ का जमाना था। उसने कालपी के अब्दुल्ला खां को चम्पत राय के दमन करने का कार्य सौपा मगर अब्दुल्ला खां को सफलता नहीं मिली। शाहजहाँ के समय में दारा शिकोह का बड़ा दबदबा था। उसने जब देखा कि मुगल सेना चम्पत राय को काबू नहीं कर पा रही है तब उसने चम्पत राय की तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाया। पता

www.ignited.in

नहीं इसमें दारा शिकोह की कूटनीतिक राजनितिक चाल थी कि चम्पत राय को बुंदेलखंड दूर भेज दिया जाय या वह चम्पत राय की वीरता से प्रभावित था, वह कंधार के घेरे में चम्पत राय को अपने साथ ले गया। कंधार के युद्ध में चम्पत राय ने बड़ी वीरता दिखलाई। दारा, चम्पत राय के साथ जब कंधार से वापस लौटा तब उसने दरबार में चम्पत राय की वीरता का शाहजहाँ से बड़ा बखान किया। डब्लू०आर० पोग्सन, **हिस्ट्री आफ बुन्देलाज** (1974 एडिशन) के पेज न० 27में लिखता है कि दारा शिकोह की संस्तुति पर शाहजहाँ ने कोंच और कनार की तीन लाख की जागीर चम्पत राय को प्रदान कर दी।

इतिहास की कितनी गलियों में घूमना पड़ा, तब मैं चम्पत राय को जिला जालौन में ला पाया और कोंच से जोड़ पाया। लेकिन अभी तो और तमाशा होना बाकी था देखिए। ओरछा नरेश पहाड़ सिंह बुंदेला को चम्पत राय की यह तरक्की सहन नहीं हुई। उन्होंने दारा शिकोह से कहा कि कोंच और कनार की जागीर हमे दें और हम उनको नौ लाख रुपए देंगे। पता नहीं दारा किस कारण लालच में पड कर चम्पत राय की सेवाओं को भुला बैठा और कोंच और कनार की जागीर पहाड़ सिंह को दे दी। आगे दारा को इसका भारी मूल्य चुकाना पड़ा। चम्पत राय दारा से बहुत नाराज हुआ और जब दिल्ली की गद्दीदारी की लड़ाई शुरू हुई चम्पत राय ने औरंगजेब का साथ दिया। इसका नतीजा यह हुआ कि औरंगजेब जब दिल्ली की गद्दी पर आशीन हुआ उसने कोंच कनार की जागीर फिर चम्पत राय को दे दी। बाद में औरंगजेब, चम्पत राय से विमुख हो गया और चम्पत राय को अंत तक मुगल सेना से जूझना पड़ा। अभी तक जिला जालौन में बुंदेलों का प्रभाव कोंच और कनार के इलाके में ही कभी-कभी रहा परन्तु चम्पत राय के पुत्र छत्रसाल के रूप में बुंदेलों को एक नायक मिल गया, जिसके समय में इस जनपद में मुगलों की सत्ता नाम मात्र की ही रह गई थी। वस्तुतः पूरा जालौन ही छत्रसाल के आधीन आ गया था। मगर कैसे? तो आइये एक बार फिर से इतिहास की तंग गलियों में घुसें और देखें कि कहाँ पहुचते हैं और क्या मिलता है।

औरंगजेब का अधिकांश समय दक्षिण के अभियानों में व्यतीत हो रहा था। कालपी की सेना भी इस मुहिम में दक्षिण गई हुई थी। छत्रसाल ने इसका फायदा उठाया और कालपी पर चढ़ दौड़े। इस समय कालपी के किले की रक्षा की जिम्मेदारी दुर्जन सिंह की थी। वह छत्रसाल का भला क्या मुकाबला करता। बाँदा के प्रसिद्ध इतिहासकार राधाकृष्ण बुन्देली और सत्य भामा बुन्देली का कथन है कि छत्रसाल ने मुगल खजाना लूट कर अपने चेले उत्तम सिंह धंधेरे को कालपी में नियुक्त कर दिया। औरंगजेब को जब कालपी पर छत्रसाल के अधिकार करने की खबर मिली तो वह बहुत क्रोधित हुआ और मुगल सरदार अनवर खां को कालपी पर अधिकार करने के लिए भेजा। मजा तो तब आया जब छत्रसाल ने अनवर खां को हराया ही नही बल्कि कैद भी कर लिया। अनवर खां की बड़ी किरकिरी हुई। बड़ी मुश्किलों से उसने एक लाख रुपए का इंतजाम किया और छत्रसाल को देकर उनकी कैद से मुक्ति पाई। अब जिले के कोंच, कनार, उरई, कालपी भदेख आदि इलाके छत्रसाल के अधिकार में थे।

बुंदेलों का शासनः

बुंदेल क्षत्रीय जाति के शासक थे तथा सुदूर अतीत में सूर्यवंशी राजा मनु से संबन्धित हैं। अक्ष्वाकु के बाद रामचन्द्र के पुत्र "लव' से उनके वंशजो की परंपरा आगे बढ़ाई गई है और इसी में काशी के गहरवार शाखा के कर्त्तृराज को जोड़ा गया है। लव से कर्त्तृराज तक के उत्तराधिकारियों में गगनसेन, कनकसेन, प्रद्युम्न आदि के नाम ही महत्वपूर्ण हैं।

कर्त्तृराज का गहरवार होना किसी घटना के आधार पर हैं जिसमें काशी में ऊपर ग्रहों की बुरी दशा के निवारणार्थ उसके प्रयत्नों में "ग्रहनिवार' संज्ञा से वह पुकारा जाने लगा था। कालांतर "ग्रहनिवार' गहरवार बन गया।

बनारस के राजाओं की अनेक समय तक सूर्यवंशी सूर्य-कुलावंतस काशीश्वर पुकारा जाता रहा है। इनकी परंपरा इस प्रकार है - कर्त्तृराज, महिराज, मूर्धराज, उदयराज, गरुड़सेन, समरसेन, आनंदसेन, करनसेन, कुमारसेन, मोहनसेन, राजसेन, काशीराज, श्यामदेव, प्रहमलाददेव, हम्मीरदेव, आसकरन, अभयकरन, जैतकरन, सोहनपाल और करनपाल। करनपाल के तीन पुत्र थे - वीर, हेमकरण और अरिब्रहम। करनपाल ने हेमकरन को अपने सामने ही गद्दी पर बैठाया था। इसे करनपाल की मृत्यु पर शेष दो भाईयों ने पदच्युत कर देश निकाला दे दिया था।

अपने भाइयों से त्रस्त होकर हेमकरन ने राजपुरोहित गजाधर से परामर्श लिया। उसने विन्धयवासिनी देवी की पूजा के लिए प्रेरित किया। मिर्जापुर में विन्ध्यवासिनी देवी की पूजा में चार नरबलियाँ दी गई, देवी प्रसन्न हुई और हेमकरन को वरदान दिया परंतु हेमकरन के भाईयों का अत्याचार हेमकरन के लिए अब भी कम नहीं हुआ। कालांतर में उसने एक और नरबलि देकर देवी को प्रसन्न किया। देवी नें पाँचों नरबलियों के कारण उसे पंचम की संज्ञा दी। इसके बाद वह विन्ध्यवासिनी का परम भक्त बन गया। जनसमाज में वह "पंचम विन्ध्येला' कहलाया। देवी द्वारा दिये गए वरदानों को ओरछा राज्य के इतिहास में विशेष महत्व दिया गया है।

www.ignited.in

एक अन्य कथा के अनुसार हेमकरन ने देवी के समक्ष अपनी गर्दन पर जब तलवार रखी और स्वयं की बलि देनी चाही तो देवी ने उसे रोक दिया परंतु तलवार की धार से हेमकरन के रक्त की पांच बूंदें गिर गई थीं इन्हीं के कारण हेमकरन का नाम पंचम बुंदेला पड़ा था। ओरथा दरबार के पत्र में अभी भी पूर्ववर्ती विरुद्ध के प्रमाण मिलते हैं जैसे - श्री सूर्यकुलावतन्स काशीश्वरपंचम ग्रहनिवार विन्ध्यलखण्डमण्लाहीश्वर श्री महाराजाधिराज ओरछा नरेश। चूंकि हेमकरन को विन्ध्यवासिनी देवी का वरदान रविवार को मिला था, ओरछा में आज भी पवरात्र महोत्सव में इस दिन नगाड़े बनाये जाते हैं। मिर्जापुर स्थित गौरा भी हेमकरन के बाद गहरवारपुरा के नाम से प्रसिद्ध है। इसके बाद का चक्र बड़ी तेजी से घूमा और वीरभद्र ने गदौरिया राजपूतों में अँटेर छीन लिया और महोनी को अपनी राजधानी बनाया। गढ़कुण्डार इसके बाद बुंदेलों की राजधानी बनी। वीरभद्र के पाँच विवाह और पाँच पुत्र प्रसिद्ध हैं - इनमें रणधीर द्वितीय रानी से, कर्णपाल तृतीय रानी से, हीराशी, हंसराज और कल्याणसिंह पँचम रानी से थे। वीरभद्र के बाद कर्णपाल (१०८७ ई० से ११९२ ई०) गद्दी पर बैठा। उसकी चार पत्नियाँ थीं। प्रथम के कन्नारशाह, उदयशाह और जामशाह पैदा हुए। द्वितीय पत्नी से शौनक देव तथा नन्नुकदेव तथा चतुर्थ पत्नी से वीरसिंहदेव का जन्म हुआ।

ओरछा के बुंदेला:

रुद्रप्रताप के साथ ही ओरछा के शासकों का युगारंभ होता है। वह सिकन्दर और इब्राहिम लोधी दोनों से लड़ा था। ओरछा की स्थापना मन १५३० में हुई थी। रुद्रप्रताप बड़ नीतिज्ञ था, ग्वालियर के तोमर नरेशों से उसने मैत्री संधी की। उसके मृत्यु के बाद भारतीचन्द्र (१५३१ ई०-१५५४ई०) गद्दी पर बैठा। हुमायूँ को जब शेरशाह ने पदच्युत करके सिंहासन कथियाया था तब उसने बुंदेलखंड के जतारा स्थान पर दुर्ग बनवा कर हिन्दु राजाओं को दमित करने के निमित्त अपने पुत्र सलीमशाह को रखा। कलिं का किला कीर्तिसिंह चन्देल के अधिकार में था। शेरशाह ने इस पर किया तो भारतीचन्द ने कीर्तिसिंह की सहायता ली। शेरशाह युद्ध में मारा गया और उसके पुत्र सलीमशाह को दिल्ली जाना पड़ा।

भारतीचन्द के उपरांत मधुकरशाह (१५५४ ई०-१५९२ ई०) गद्दी पर बैठा। इसके बाद समय में स्वतंत्र ओरछा राज्य की स्थापना हुई। अकबर के बुलाने पर जब वे दरबार में नहीं पहुँचा तो सादिख खाँ को ओरछा पर चढ़ाई करने भेजा गया। युद्ध में मधुकरशाह हार गए। मधुकरशाह के आठ पुत्र थे, उनमें सबसे ज्येष्ठ रामशाह के द्वारा बादशाह से क्षमा याचना करने पर उन्हें ओरछा का शासक बनाया गया। राज्य का प्रबन्ध उनके छोटे भाई इन्द्रजीक किया करते थे। केशवदास नामक प्रसिद्ध कवि इन्हीं के दरबार में थे।

इन्द्रजीत का भाई वीरसिंह देव (जिसे मुसलमान लेखकों ने नाहरसिंह लिखा है) सदैव मुसलमानों का विरोध किया करता था) उसे कई बार दबाने की चेष्टा की गई पर असफर ही रही। अबुलफज़ल को मारने में वीरसिंहदेव ने सलीम का पूरा सहयोग किया था, इसलिए वह सलीम के शासक बनते ही बुंदेलखंड का महत्वपूर्ण शासक बना। जहाँगीर ने इसकी चर्चा अपनी डायरी में की है।

वीरसिंह देव (१६०५ ई० - १६२७ ई०) के शासनकाल में ओरछा में जहाँगीर महल तथा अन्य महत्वपूर्ण मंदिर बने थे। जुझारसिंह ज्येष्ठ पुत्र थे, उन्हें गद्दी दी गई और षेष ११ भाइयों को जागीरें दी गई। सन् १६३३ ई० में जुझारसिंह ने गोड़ राजा प्रेमशाह पर आक्रमण करके चौरागढ़ जीता परंतु शाहजहाँ नें प्रत्याक्रमण किया और ओरछा खो बैठे। उन्हें दक्षिण की ओर भागना पड़ा। उनके कुमारों को मुसलमान बनाया गया तथा वे कहीं पर दक्षिण में ही मारे गये। वीरसिंह के बाद ओरछा के शासकों में देवीसिंह और पहाड़सिहं का नाम लिया जाता है परंतु ये अधिक समय तक राज न कर सके।

वीरसिंह के उपरांत चम्पतराय प्रताप का इतिहास प्रसिद्ध है। औरंगज़ेब की सहायता करने (दारा के विरुद्ध) पर उन्हें ओरछा से जमुना तक का प्रदेश जागीर में दिया गया था। दिल्ली दरबार के उमराव होते हुए भी चम्पतराय ने बुंदेलखंड को स्वाधीन करने का प्रयत्न किया और वे औरंगज़ेब से ही भीड़ गए। सन १६६४ में चम्पतराय ने आत्महत्या कर ली। ओरछा दरबार का प्रभाव यहाँ से शून्य हो जाता है।

पन्ना दरबार इसी के बाद छत्रसाल के नेतृत्व में उन्नति करता है। ओरछा गज़ेटियर के अनुसार मुगल शासकों नें चम्पतराय के परिवार को गद्दी न दी और जुझारसिंह के भाई पहाड़सिंह को शासक नियुक्त किया। ओरछा के परवर्ती शासकों ने सुजानसिंह (१६५३ ई०-१६७२ ई०), इन्द्रमीण (१६७२ ई०-१६७५ ई०), यशवंत सिंह (१६७५ ई०-१६८४ ई०), भगवंत सिंह (१६८४ ई० - १६८९ ई०), उद्दोतसिंह, दत्तक पुत्र (१६८९ ई०-१७३६ ई०), पृथ्वी सिंह (१७३६ ई०-१७५२ ई०), सावंत सिंह (१७५२ ई०-१७६५ ई०) तथा हतेसिंह विक्रमाजीत, धरमपाल, तेजसिंह, हमीरीसिंह, प्रतापसिंह के नाम प्रमुख हैं।

छत्रसाल ने बुंदेलखंड की स्वतंत्र सत्ता स्थापित करने में अथक परिश्रम किया। औरंगज़ेब ने इन्हें भी दबाने की कोशिश की पर

www.ignited.in

सफल न हुए। छत्रसाल ने कलिं को भी अपने अधिकार में किया। सन् १७०७ ई० सें औरंगज़ेब के मरने के बाद बहादुरगढ़ गद्दी पर बैठा। छत्रसाल से इसकी खूब बनी। इस समय मराठों का भी ज़ोर बढ़ गया था।

छत्रसाल स्वयं कवि थे। छत्तरपुर इन्हीं ने बसाया था। कलाप्रेमी और भक्त के रूप में भी इनकी ख्याती थी। धुवेला-महल इनकी भवन निर्माण-कला की स्मृति दिलाता है। बुंदेलखंड की शीर्ष उन्नति इन्हीं के काल में हुई। छत्रसाल की मृत्यु के बाद बुंदेलखंड राज्य भागों में बँट गया। एक भाग हिरदेशाह, दूसरा जगतराय और तीसरा पेशवा को मिला। छत्रसाल की मृत्यु १३ मई सन् १७३१ में हुई थी।

(क) प्रथम हिस्से में हिरदेशाह को पन्ना, मऊ, गढ़ाकोटा, कलिंजर, शाहगढ़ और उसके आसपास के इलाके मिले। (ख) द्वितीय हिस्से में जगतराय को जैतपुर, अजयगढ़, जरखारी, बिजावर, सरोला, भूरागढ़ और बाँदा मिला। (ग) बाजीराव को तीसरे हिस्से में कलपी, हटा, हृदयनगर, जालौन, गुरसाय, झाँसी, गुना, गढ़कोटा और सागर इत्यादि मिला।

अठारवीं शताब्दी में हिन्दुपत के वंशज सोनेशाह ने छत्तरपुर की स्थापना की। कृष्णकवि (पन्ना दरबार के राजकवि) ने इसे छत्रसाल द्वारा बसाया माना है। जबकि छत्तरपुर गजेटियर में इसे सोनोशाह का नाम ही दिया है। सोनेशाह के बाद छत्तरपुर राज्य में प्रतापसिंह, जगतराज और विश्वनाथसिंह आदि राजाओं ने शासन किया। सोनेशाह के समय में छत्तरपुर में अनेक महलों, तालाबों, मन्दिरों का निर्माण करवाया।

बुंदेलखंड मे राजविद्रोहः

सन् १८४७ का वर्ष अंग्रेजों के लिए इसीलिए उत्तम सिद्ध हुआ था क्योंकि महाराज रणजीत सिंह का पुत्र उनके बाद पंजाब का राजा बनाया गया। लार्ड डलहौज़ी इस समय गवर्नर जनरल थे और उन्होंन दिलीपसिंह को अयोग्य शासक बताकर पंजाब पर कब्जा जमा लिया। शिवाजी के वंशज प्रतापसिंह को पुर्तगालियों से मिले रहने का आरोप लगा कर सतारा में कैद किया और दक्षिण का बाग अपने अधीन किया। झाँसी में गंगाधरराव की मृत्यु के बाद दामोदर राव को गोद लिया गया। लक्ष्मी बाई को हटाने के प्रयत्न भी जारी हो गए परंतु इसी समय १८५७ के विद्रोह की घटना घटी। बरहमपुर, मेरठ, दिल्ली, मुर्शीदाबाद, लखनऊ, इलाहाबाद, काशी, कानपुर, झाँसी में विद्रोह हुआ और कई स्थान पर उपद्रव हुए। झाँसी पर विद्रोहियों ने किले पर अपना अधिकार जमाया और रानी लक्ष्मीबाई ने किसी प्रकार युद्ध करके अपना अधिकार जमाया और रानी लक्ष्मीबाई कहलाई।

सागर की ४२ न० पलटन ने अंग्रेजी हुकूमत मानना अस्वीकार कर दिया। बानपुर के महाराज मर्दनसिंह ने अंग्रेजी अधिकार के परगनों पर कब्जा करना प्रारंभ कर दिया। खुरई का अहमदबख्श तहसीलदार भी मर्दनसिंह में मिल गया। ललितपुर, चंदेरी पर दोनों ने कब्जा किया। शाहगढ़ में बख्तवली ने अपनी स्वतंत्र सत्ता घोषित की। सागर की ३१ नं० पलटन चूंकि बागी न थी इसीलिए उसकी सहायता से मर्दनसिंह की मालथौन में डटी हुई सेना को हटाया गया, फिर ४२ नं० पलटन से युद्ध हुआ।

बख्तवली नें ३१ नं० पलटन ने शेखरमजान से मेल कर लिया विद्रोह की लहर, सागर, दमोह, जबलपुर आदि स्थानों में फैल गई। इस समय तक पन्ना के राजा की स्थिती मजबूत थी, अंग्रेजों ने उनसे सहायता माँगी। राजा ने तुरन्त सेना पहुँचाई और जबलपुर की ५२ नं० की पलटन को बुरी तरह दबा दिया गया। शनैः शनैः बख्तवली और मर्दनसिंह को नरहट की घाटी में सर हारोज ने पराजित किया। अंग्रेजी सेना झाँसी की ओर बढ़ती गई। झाँसी, कालपी में अंग्रेजों को डटकर मुकाबला करना पड़ा। रानी लक्ष्मी बाई दामोदर राव (पुत्र) को अपनी पीठ पर बाँधकर मर्दाने वेश में कालपी की ओर भाग गयी। इसके बाद झाँसी पर भी अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

कालपी में एक बार फिर बख्तवली और मर्दनसिंह ने रानी के साथ मिलकर सर ह्यूरोज से युद्ध किया। यहाँ भी उसे पराजय हाथ लगी। वह ग्वालियर पहुँची और सिंधिया को हराकर वहाँ भी शासक बन बैठी पर सर ह्यूरोज ने ग्वालियर पर अचानक हमला किया। राव साहब पेशवा, तात्या टोपे का पराभव, रानी की मृत्यु आदि ने पूर्णतः विद्रोह की अग्नि को ठंडा कर दिया। बुंदेलखंड के सारे प्रदेश इस प्रकार अंग्रेजी राज्य में समा गए।

बुंदेलखंड का राजविद्रोह वास्तव में जनता का विद्रोह न होकर सामन्तों और सेना का विद्रोह था इसी पृष्ठभूमि में सांस्कृतिक और धार्मिक भावना के साथ साथ स्वामिभक्ति का पुट विशेष है। देश की सीमा वस्तुतः सामन्तो की जागीरों अथवा राज्यों की सीमायें थीं। सामन्तों का धर्म जनता का धर्म था अतः विद्रोहियों द्वारा देश पर कब्जा और धर्म का नाश असहय था जिसे गोली में लगी चर्बी के बहाने हिन्दु और मुसलमानों दोनो ने व्यक्ति किया।

कल्याण सिंह कुड़रा ने झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की वीर गाथा करते हुए लिखा है - चलत तमंचा तेग किर्च कराल जहां गुरज गुमानी गिरै गाज के समान।

www.ignited.in

तहाँ एकै बिन मध्यै एकै ताके सामरथ्यै, एकै डोलै बिन हथ्यै रन माचौ घमासान।।

जहाँ एकै एक मारैं एकै भुव में चिकारै, एकै सुर पुर सिधारैं सूर छोड़ छोड़ प्रान।

तहाँ बाई ने सवाई अंगरेज सो भंजाई, तहाँ रानी मरदानी झुकझारी किरवान।।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गिरीश चंद्र द्विवेदी, द जाट्स - मुगल साम्राज्य में उनकी भूमिका, डॉ वीर सिंह द्वारा एड। दिल्ली, 2003, पी। 22

2. गिरीश चंद्र द्विवेदी, द जाट्स - मुगल साम्राज्य में उनकी भूमिका, डॉ वीर सिंह द्वारा एड। दिल्ली, 2003, पी। 22

3. गिरीश चंद्र द्विवेदी, द जाट्स - मुगल साम्राज्य में उनकी भूमिका, डॉ वीर सिंह द्वारा एड। दिल्ली, 2003, पी। 23

4. गिरीश चंद्र द्विवेदी, द जाट्स - मुगल साम्राज्य में उनकी भूमिका, डॉ वीर सिंह द्वारा एड। दिल्ली, 2003, पी। 17

5. इरफान हबीब, मुगल भारत की कृषि प्रणाली (बॉम्बे: 1 9 63), पी। 318

6. शाह वालुल्लाह दहलवी के सियासी मुकुब्बत, (ए। निजामी द्वारा पर्स टेक्स्ट और उर्दू ट्रांस, दूसरा संस्करण, दिल्ली, पृष्ठ 2

7. अली मुहम्मद खान द्वारा मिरेट-ए-अहमदीर को ऊपर उठाएं मनुची (स्टोरिया, II, पृष्ठ 144

8. गिरीश चंद्र द्विवेदी, द जाट्स - मुगल साम्राज्य में उनकी भूमिका, डॉ वीर सिंह द्वारा एड। दिल्ली, 2003, पी।22

Corresponding Author

Kusum Lata*

Extension Lecturer in History, Government College, Meham, Haryana

kusumlata1002@gmail.com